International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

श्री अरविंद घोष द्वारा प्रतिपादित समग्र शिक्षा के लक्ष्य

नीरज कुमार [1*] डा०शैल ढाका[2]**
शोधार्थी [1*] शोध निर्देशिका[2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड—टू—बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

सारांश

समग्र शिक्षा के संदर्भ में ग्यारह विशिष्ट लक्ष्यों की पहचान की गई है। श्री अरविंद घोष और द डिवाइन मदर के दर्शन में सभी लक्ष्यों को मंजूरी मिली हुई है। महत्वपूर्ण रूप से, इस प्रकार पहचाने गए सभी ग्यारह लक्ष्यों का उपयोग एक अभिन्न शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा प्रक्रिया को मान्य करने के लिए किया जा सकता है। दिलचस्प बात यह है कि सभी ग्यारह लक्ष्यों को शिक्षा पर द डिवाइन मदर के लेखन से पहचाना जा सकता है क्योंकि वह कक्षाओं में श्री अरविंद के दर्शन को आकार देने के उद्यम में सक्रिय रूप से शामिल थीं।

कुंजी शब्द—समग्र शिक्षा एवं लक्ष्य

प्रस्तावना—

शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी स्वयं सभ्यता और यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया है कि प्रत्येक शैक्षिक प्रक्रिया, चाहे सचेत हो या अचेतन, के कुछ निश्चित लक्ष्य होते हैं। शैक्षिक परिदृश्य में लक्ष्य निर्दिष्ट करना हमेशा से मुश्किल काम रहा है, क्योंकि किसी भी शिक्षा या विशिष्ट शैक्षिक प्रणाली का दायरा सैद्धांतिक रूप से असंख्य है। अक्सर हम किसी विशेष शैक्षिक प्रणाली की प्रभावकारिता या अन्यथा का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षा में कुछ आसानी से देखने योग्य और सत्यापन योग्य लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं। शिक्षकों के बीच यह भी एक सामान्य अवलोकन रहा है कि किसी विशेष शैक्षणिक व्यवस्था में कुछ पूर्वकल्पित लक्ष्य छूट गए हैं, जबकि अन्य समान रूप से स्वीकार्य लक्ष्य, हालांकि पहले पहचाने नहीं गए थे, प्राप्त कर लिए गए हैं।

समग्र शिक्षा के संदर्भ में ग्यारह विशिष्ट लक्ष्यों की पहचान की गई है। श्री अरविंद घोष और द डिवाइन मदर के दर्शन में सभी लक्ष्यों को मंजूरी मिली हुई है। महत्वपूर्ण रूप से, इस प्रकार पहचाने गए सभी ग्यारह लक्ष्यों का उपयोग एक अभिन्न शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा प्रक्रिया को मान्य करने के लिए किया जा सकता है। दिलचस्प बात यह है कि सभी ग्यारह लक्ष्यों को शिक्षा पर द डिवाइन मदर के लेखन से पहचाना जा सकता है क्योंकि वह कक्षाओं में श्री अरविंद घोष के दर्शन को आकार देने के उद्यम में सक्रिय रूप से शामिल थीं।

पहला लक्ष्य— अपने जीवन को सही तरीके से आगे बढ़ाना—

पहले लक्ष्य के कथन में दो महत्वपूर्ण वाक्यांश हैं, अर्थात्, **'अपना जीवन जीएं'** और **'सही तरीके से'**। **'अपना जीवन जीने'** की अवधारणा का आधार इस धारणा पर आधारित है कि एक व्यक्ति अपने भाग्य का स्वामी है। दूसरे शब्दों में, उसकी स्वतंत्र इच्छा उसे जीवन में कई पाठ्यक्रमों के बीच चयन करने का अधिकार देती है, और उसे अपनी पसंद के अभ्यास के लिए जिम्मेदार होना पड़ता है। आलोचनात्मक रूप से, चयन की जिम्मेदारी

स्वाभाविक रूप से अगले वाक्यांश— **'सही रास्ते'** की ओर ले जाती है। पसंद की स्वतंत्रता एक दोधारी तलवार है, अगर चुनाव ठीक से नहीं किया गया तो यह नुकसान पहुंचा सकती है। दूसरे शब्दों में, यदि किसी व्यक्ति को सही अर्थ में शिक्षित करना है तो **'सही मार्ग'** की अवधारणा का विकास अनिवार्य है।

इस मामले में निर्णायक भूमिका शिक्षक निभा सकता है। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसमें अपने विद्यार्थियों की सोच को ढालने की क्षमता है, एक शिक्षक को जीवन को सही तरीके से जीने का एक जीवंत उदाहरण बनकर सामने आना होगा। बहुत बार, शिक्षक के अवलोकन से ही एक छात्र सही जीवन जीने के तरीकों और साधनों के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण बना पाता है। नैतिक उपदेश से अधिक, एक शिक्षक का जीवन एक मॉडल है जो एक छात्र के लिए अधिक स्पष्ट और व्यावहारिक तरीके से स्पष्ट होना चाहिए।

इसके अलावा, एक शिक्षक को सतर्क रहना चाहिए ताकि उसके शिष्य खुद को अवांछित प्रभावों के संपर्क में न लाएँ। माँ इसे इस प्रकार समझाती हैं, '(यह) सामान्यत: पुरुषों का दृष्टिकोण है, वे जीवन में आते हैं, वे नहीं जानते कि क्यों; वे जानते हैं कि वे एक निश्चित संख्या में वर्षों तक जीवित रहेंगे, वे नहीं जानते कि क्यों वे सोचते हैं कि उन्हें मरना होगा क्योंकि हर कोई मर जाता है, और वे फिर से नहीं जानते कि क्यों; और फिर, अधिकांश समय वे ऊब जाते हैं क्योंकि उनके पास अपने आप में कुछ भी नहीं है, वे खाली प्राणी हैं और शून्यता से अधिक उबाऊ कुछ भी नहीं है; और इसलिए वे इसे ध्यान भटकाने से भरने की कोशिश करते हैं, वे बिल्कुल बेकार हो जाते हैं, और जब वे अंत तक पहुंचते हैं, तो वे अपना पूरा अस्तित्व, अपनी सारी संभावनाएं बर्बाद कर चुके होते हैं— सब कुछ खो जाता है।'

दूसरे शब्दों में, एक शिक्षक को विद्यार्थियों में जिज्ञासा की भावना पैदा करनी चाहिए जो उन्हें शब्दों या उपदेशों के माध्यम से जो कुछ भी सौंपा जाता है उस पर सवाल उठाने में सक्षम बनाए। यह जिज्ञासा उन्हें वांछनीय और अपरिहार्य के बीच अंतर करने के लिए प्रेरित करेगी और उन्हें अपना जीवन सही तरीके से जीने में मदद करेगी।

दूसरा लक्ष्य— आकांक्षा के प्रति प्रेम विकसित करना

श्री अरविंद घोष के दर्शन के संदर्भ में आकांक्षा विकास के सबसे दृश्यमान और परिभाषित लक्ष्यों में से एक रही है। प्रभावी रूप से, आकांक्षा का अर्थ है **'ईश्वर के लिए या दिव्य चेतना से संबंधित उच्चतर चीजों के लिए पुकार'।** दूसरे शब्दों में, आकांक्षा स्वयं को उस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का साधन है जो वांछनीय है। छात्रों में आकांक्षा की भावना पैदा करने का एक महत्वपूर्ण तरीका उन्हें भौतिक अस्तित्व की निरर्थकता, इसकी अस्थायी और अस्थिर प्रकृति का एहसास कराना है। इसे वास्तविक जीवन स्थितियों के उदाहरणों के माध्यम से उनमें स्थापित किया जा सकता है। छात्रों को विशुद्ध रूप से भौतिक खुशियों और उच्च सोच और सही अभिनय की खुशियों के बीच अंतर का एहसास कराया जाना चाहिए। हालाँकि यह अक्सर एक कठिन कार्य होता है, लेकिन इसके पुरस्कार इतने समृद्ध होते हैं कि एक शिक्षक को हमेशा छात्रों के दिमाग को ढ़ालने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए ताकि वे ऐसी स्थिति में आएँ जहाँ वे स्वाभाविक रूप से जो कुछ भी करने की इच्छा

रखते हैं उसके लिए आकांक्षा विकसित कर सकें। द डिवाइन मदर द्वारा तैयार की गई SAICE की **'छात्र प्रार्थना'** विद्यार्थियों के बीच आकांक्षा विकसित करने के महत्व का प्रतिबिंब है— हमें नायक योद्धा बनाएं जो हम बनना चाहते हैं। क्या हम भविष्य की उस महान लडाई को सफलतापूर्वक लड़ सकते हैं जो जन्म लेने वाली है, उस अतीत के खिलाफ जो सहना चाहता है; ताकि नई चीजें प्रकट हो सकें और हम उन्हें प्राप्त करने के लिए तैयार हों?

तीसरा लक्ष्य— निरंतर प्रगति के लिए प्रेम विकसित करना

श्री अरविंद घोष के दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक यह है कि संपूर्ण मानव जाति, जाति, रंग या पंथ के बावजूद, पूर्णता के लिए विकास की दिशा में निरंतर गति में है। शिक्षा का उद्देश्य इस प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से सहायता करना और जीवन और मन के उच्च स्तर की प्राप्ति में तेजी लाना है। इसलिए, शिक्षक की प्रमुख भूमिकाओं में से एक विद्यार्थियों में प्रगति के प्रति प्रेम की भावना को बढावा देना है। कोई भी बाहरी प्रेरणा विद्यार्थियों के मन में निरंतर प्रगति के प्रति पर्याप्त और स्थायी प्रेम पैदा नहीं कर सकती। एक शिक्षक को विद्यार्थियों के मन में यह अहसास जगाना चाहिए कि प्रगति की कमी का मतलब प्रभावी रूप से ठहराव और मृत्यु होगा। जब विद्यार्थियों में यह भावना विकसित हो जाती है, तो उनकी प्रत्येक क्रिया प्रगति और प्रतिगमन के बीच जांच के परिणामस्वरूप होती है। निश्चित रूप से, ऐसे विद्यार्थियों से निकलने वाले सभी कार्य वे कार्य होते हैं जो उनकी प्रगति में सहायता करते हैं, जिस भी क्षेत्र में उन्होंने प्रगति करना चुना है। इस लक्ष्य के संबंध में शिक्षक की भूमिका अनिवार्य रूप से एक मनोवैज्ञानिक ढांचे में से एक है जो प्रगति के लक्ष्य पर आधारित कार्यों का समर्थन और रखरखाव करता है।

चौथा लक्ष्य— एकाग्रता विकसित करना

द डिवाइन मदर अक्सर SAICE में विद्यार्थियों को लिखे अपने लेखन में कहती थीं कि किसी व्यक्ति का आवश्यक मूल्य उसकी एकाग्रता की प्रकृति और गुणवत्ता से मापा जाता है। एकाग्रता को किसी कार्य पर अपनी मानसिक ऊर्जा को केंद्रित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ताकि कार्य से वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें। यह एक सामान्य अवलोकन है कि कक्षा में अधिकांश छात्र मौजूदा गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने में अंतर्निहित असमर्थता से पीड़ित हैं। प्रगति की इस बाधा को दूर करने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यदि अनियंत्रित छोड दिया जाए, तो भटकता हुआ मन अक्सर अवांछनीयता की शरण ले सकता है। एक शिक्षक को छात्र की एकाग्रता की कमी के पीछे के कारणों की पहचान करनी चाहिए और ध्यान केंद्रित करने की शक्ति विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। हालाँकि यह कहना अक्सर आसान होता है, लेकिन करना पूरी तरह से असंभव नहीं है। यह कार्य और भी जटिल है क्योंकि विद्यार्थी की एकाग्रता की कमी का कारण अक्सर स्कूल के परिसर के बाहर होता है। ऐसी परिस्थितियों में, एक शिक्षक को एकाग्रता की कमी के कारणों पर शोध करना चाहिए और उन्हें प्रभावी और नवीन तरीकों से संबोधित करना चाहिए। यह यांत्रिक एकाग्रता अभ्यासों, एकाग्रता की आवश्यकता वाले खेलों और खेलों के माध्यम से, या कभी—कभी, उपाख्यानों या कहानियों को

सुनाकर भी किया जा सकता है। समग्र शिक्षा में इस महत्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नवोन्मेषी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।

पांचवां लक्ष्य— स्वयं को जानना और अपना भाग्य स्वयं चुनना

लक्ष्य का पहला भाग मूलत: एक दार्शनिक मुद्दा है। भारतीय दर्शन के अधिकांश शास्त्रीय विद्यालयों का प्रस्ताव है कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य स्वयं को जानना है, दूसरे शब्दों में, पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति और उद्देश्य को जानना है। जीवन का उद्देश्य निश्चित रूप से सामान्य भौतिक और शारीरिक इच्छाओं से प्रेरित होकर, निष्क्रिय तरीके से अपना जीवन जीना नहीं है। एक बार जब एक छात्र को मानव में निहित उच्च मूल्य का एहसास कराया जाता है, तो उसे इस तरह से कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाएगा जिससे उसे अपने भाग्य का एहसास करने में मदद मिलेगी। यहाँ, नियति का अर्थ सामान्य, भौतिक अर्थ में किसी लक्ष्य का निर्णय करना नहीं है। हालाँकि एकात्म दर्शन में भौतिकवाद को कभी भी सिरे से खारिज नहीं किया जाता है, लेकिन इसकी अंतर्निहित अधीनता प्रकृति पर जोर दिया जाता है। माँ ने समझाया, 'स्वयं को जानने का अर्थ है अपने कार्यों और प्रतिक्रियाओं के उद्देश्यों को जानना, स्वयं में जो कुछ भी घटित होता है उसका क्यों और कैसे जानना। किसी पर महारत हासिल करने का अर्थ है जो करने का उसने निर्णय लिया है उसे करना, उसके अलावा कुछ नहीं करना, आवेगों, इच्छाओं या कल्पनाओं को सुनना या उनका पालन नहीं करना।'

इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के सामने वे रास्ते खोलना है जिनके लिए वह खुला है और उसे अपनी अव्यक्त क्षमताओं के परामर्श से कार्रवाई के सही तरीके पर निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाना है।

छठा लक्ष्य— निचले स्तर के अत्याचार पर काबू पाना

युवाओं और किशोरों को तरह—तरह की अंधी इच्छाएं लगातार परेशान कर रही हैं। शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों के साथ व्यवहार करते समय यह तमाशा काफी आम है। समस्या तब और बढ़ जाती है जब छात्र वास्तविक आवश्यकता और मात्र इच्छा आवेग के बीच अंतर करने की क्षमता खो देते हैं।..... वे अपनी सभी इच्छाओं को जरूरतों या जरूरतों के लिए ले लेते हैं और भावुक परित्याग के साथ खुद को इनमें डुबा देते हैं'

इसलिए शिक्षक को यहां कदम उठाना होगा और छात्रों का ध्यान सभी अवांछनीय खिंचावों से हटाकर उनकी इच्छा—आवेग को सही प्रकार के चैनलों की ओर केंद्रित करने में मदद करनी होगी। इस संबंध में माँ की सलाह: '.....जब एक बच्चा इच्छाओं से भरा होता है, अगर कोई उसे एक उच्च प्रकार की इच्छा दे सकता है— न कि यह विशुद्ध रूप से भौतिक वस्तुओं की इच्छा है, तो आप समझते हैं, यह पूरी तरह से क्षणभंगुर है संतुष्टि. ..... अगर कोई अपने अंदर जानने की इच्छा, सीखने की इच्छा, एक उल्लेखनीय व्यक्ति बनने की इच्छा जगा

सके— इस प्रकार, उससे शुरुआत करें। चूँकि ये चीजें करना कठिन है, इसलिए धीरे—धीरे, वह इन चीजों के लिए अपनी इच्छाशक्ति विकसित करेगा।'

इसलिए, छोटी—छोटी चीजों के लिए लगातार लालायित रहने की आदत से बाहर आना, द डिवाइन मदर के शिक्षा दर्शन में छठा शैक्षिक लक्ष्य है।

सातवां लक्ष्य— प्रबुद्ध कारण द्वारा शासित जीवन जीना

सातवें लक्ष्य के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। पहला, कारण के माध्यम से किसी के जीवन जीने की आवश्यकता को स्वीकार करना है और दूसरा यह सुनिश्चित करना है कि कारण प्रबुद्ध है। यह एक सामान्य अवलोकन है कि अधिकांश युवा प्रवृत्ति और कम इच्छाओं का जीवन जीते हैं। वे क्षणिक आवेगों को अपने कार्यों को निर्देशित करने की अनुमति देते हैं, बिना यह जाने कि आवेगों द्वारा संचालित ऐसे कार्य किसी भी योग्य उद्देश्य या प्रेरणा से रहित होते हैं।

समग्र शिक्षा की योजना में तर्क को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। यही वह पहलू है जिसने आज की दुनिया में समग्र शिक्षा को प्रासंगिक बना दिया है। यह वास्तव में सत्य है कि कोई भी शैक्षिक उद्यम जिसमें तर्क के लिए कोई स्थान नहीं है, आधुनिक समाज में असफल होना निश्चित है। हालाँकि, समग्र शिक्षा में विवेक के उपयोग द्वारा कारण को **'प्रबुद्ध'** किया जाना है।

श्री अरविंद घोष इस संदर्भ में कुछ प्रासंगिक कहते हैं—

'तर्कहीन या अतार्किक बनने से कोई व्यक्ति सामान्य प्रकृति से परे सुपर प्रकृति में नहीं जा सकता है। इसे तर्क के माध्यम से अति कारण के वृहत्तर प्रकाश तक ले जाकर किया जाना चाहिए। परम कारण तर्क में उतरता है और उसकी सीमाओं को तोड़ते हुए भी उसे उच्च स्तर तक ले जाता है। तर्क नष्ट नहीं होता बल्कि बदल जाता है और अपना सच्चा असीमित स्व, परा प्रकृति की एक समन्वयकारी शक्ति बन जाता है।

इस लक्ष्य का दायरा स्कूल के वर्षों से भी आगे जाता है। हालाँकि, स्कूल में, एक शिक्षक को बच्चे में तर्क के महत्व की अवधारणा लानी चाहिए, विशेषकर, प्रबुद्ध कारण—एक ऐसा संकाय जो बच्चे को उन कार्यों के बीच अंतर करने में मदद करता है जो उसके लिए उपयोगी हैं और जो नहीं हैं। एक बार जब यह पहलू बच्चे के मानस में गहराई से स्थापित हो जाता है, तो वह इसे स्कूल के बाहर अपने जीवन में ले जाएगा और तदनुसार अपना जीवन व्यतीत करेगा।

आठवां लक्ष्य: आत्म—अनुशासित होना

यह विचार कि किसी भी उद्यम की सफलता के लिए अनुशासन अनिवार्य है, सभ्यता जितनी ही पुरानी है। अनुशासन शिक्षा सहित किसी भी उद्यम में अत्यधिक मूल्यवान नियंत्रण और दिशा लाता है। आधुनिक शिक्षकों का मानना है कि सभी प्रकार के अनुशासन में, आत्म—अनुशासन ही सबसे बडा मूल्य है क्योंकि बच्चे के दिमाग में पनपने वाली कोई भी अनुशासन अवधारणा लंबे समय तक, कभी—कभी स्थायी रूप से भी टिकने की संभावना होती है। माँ के विचार में, बच्चे की शिक्षा सहजता, प्रेम और स्वतंत्रता पर आधारित होनी चाहिए। एक बार जब

बच्चे के दिमाग को समझदार होने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, तो उसे सच्ची और व्यापक स्वतंत्रता दी जा सकती है और शिक्षक निश्चिंत हो सकता है कि स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं किया जाएगा। वह कहती है:'... आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यह असीम रूप से अधिक मूल्यवान है। आप जो प्रगति करेंगे, क्योंकि आप अपने भीतर इसे करने की आवश्यकता महसूस करेंगे, क्योंकि यह एक प्रेरणा है जो आपको अनायास आगे बढाती है, और इसलिए नहीं कि यह किसी पुरुष की तरह आप पर थोपी गई चीज है— आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह प्रगति है असीम रूप से महान. आपमें जो कुछ भी चीजों को अच्छी तरह से करने की कोशिश करता है, उसे सहजता और ईमानदारी से करने की कोशिश करता है; यह कुछ ऐसा है जो आपके भीतर से आता है, और इसलिए नहीं कि यदि आप अच्छा करेंगे तो आपको पुरस्कार और बुरा करने पर दंड देने का वादा किया गया है। हमारा सिस्टम इस पर आधारित नहीं है।'

इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका फिर से सर्वोपरि है। वह न केवल उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करते हैं, बल्कि जीवन के प्रत्येक अवलोकनीय क्षेत्र से अनुशासन के गुणों की प्रशंसा भी करते हैं। उसे न केवल अपने कार्यों और व्यवहार में, बल्कि विद्यार्थियों के प्रति अपने दृष्टिकोण और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले पाठों में भी अनुशासित होना चाहिए। इस अर्थ में, अनुशासन एक अवरोधक शक्ति नहीं होगी जो आंदोलन की स्वतंत्रता को रोकती है, बल्कि कानून, व्यवस्था और नियंत्रण के प्रति सम्मान होगा जो शिक्षार्थियों के मन में वास्तविक खुशी और शांति लाता है। आश्रम स्कूल के एक शिक्षक को लिखे पत्र में, माँ कहती है— 'उदाहरण सबसे शक्तिशाली प्रशिक्षक है। कभी भी किसी बच्चे से अनुशासन के उस प्रयास की मांग न करें जो आप खुद नहीं करते।'

नौवां लक्ष्य: प्रत्येक बच्चे को उनकी पूरी क्षमता का एहसास कराने में मदद करना

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की एक विशेषता शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच भारी बेमेल है। समकालीन शिक्षा परिदृश्य में लगभग सभी शिक्षकों का यह सामान्य अनुभव है कि एक शिक्षक को कक्षाओं में असंगत रूप से बडी संख्या में छात्रों का प्रबंधन करने के लिए छोड़ दिया जाता है। इससे शिक्षक के पास विद्यार्थियों पर व्यक्तिगत ध्यान देने की बहुत कम या कोई संभावना नहीं रह जाती है। कक्षाओं में भीड़ होती है और व्यक्तिगत विद्यार्थियों के बजाय समग्र कक्षाओं को एकल इकाई माना जाता है।

इस संदर्भ में समग्र शिक्षा का यह आधार कि प्रत्येक बच्चे को अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने में मदद की जानी चाहिए, महत्व रखता है। हर एक बच्चा बाकियों से अलग व्यक्ति है और इस प्रकार किसी भी मानव—निर्माण शिक्षा को कक्षा में और उसके बाहर हर एक बच्चे को पूरा करना चाहिए। इस स्थिति में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। चूँकि कक्षा में छात्रों की संख्या कम करना शिक्षक की शक्तियों के दायरे से बाहर है, इसलिए उसे व्यक्तिगत छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्थिति का सर्वोत्तम उपयोग करना होगा। माँ ने कहा है— 'शिक्षक को कोई ऐसी किताब नहीं होनी चाहिए जो ऊँची आवाज में पढी जाए, हर किसी के लिए समान हो, चाहे उसका स्वभाव और चरित्र कुछ भी हो। शिक्षक का पहला कर्तव्य छात्र को स्वयं को जानने और यह पता लगाने में मदद करना है कि वह क्या करने में सक्षम है... बैठने वाली कक्षा की पुरानी पद्धति जिसमें

शिक्षक सभी को एक ही पाठ पढाता है, निश्चित रूप से किफायती और आसान है, लेकिन यह बहुत अप्रभावी भी है और इसलिए हर किसी का समय बर्बाद होता है।'

यह उद्धरण हमें सीधे उस ओर ले जाता है जिसे सीता राम जयसवाल अपने निबंध **'भविष्य की शिक्षा'** में **'प्राथमिकताओं का संकट'** कहते हैं। 'समय के संदर्भ में सीमित संसाधन स्वाभाविक रूप से एक शिक्षक को अपने कार्यों को इस तरह से प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करेंगे जिससे विद्यार्थियों का अधिकतम संभव व्यक्तिगत अवलोकन सुनिश्चित हो सके।'

दसवां लक्ष्य— वास्तविक व्यक्तित्व विकसित करना

व्यक्तित्व का विकास सभी शैक्षिक प्रणालियों का एक और महत्वपूर्ण लक्ष्य है, विशेष रूप से समग्र शिक्षा प्रणाली का। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो व्यक्तित्व के विकास में आत्मविश्वास और आत्म—विश्वास का समवर्ती विकास शामिल होगा। यह आमतौर पर देखा जाता है कि आत्मविश्वास की कमी के कारण बच्चे आसानी से **'बैंड—वैगन प्रभाव'** के अधीन हो जाते हैं, जहां वह केवल वही करता है जो उसके आसपास के लोग कर रहे हैं। किसी बच्चे की अपनी क्षमता और वह क्या करने में सक्षम है, इसके बारे में जागरूकता के बिना कोई भी वास्तविक व्यक्तित्व विकसित नहीं हो सकता है। 28 जुलाई 1954 को आश्रम स्कूल में छात्रों के एक समूह को द डिवाइन मदर ने बहुत ही स्पष्टता से कहा। छाप पड जाती है. अब, सब कुछ एक **'अंगूठा'** है— 'एक व्यक्त विचार, एक पढा हुआ वाक्य, एक देखी गई वस्तु, कोई और क्या करता है उसका अवलोकन, और किसी के पडोसी की इच्छा। और ये सभी इच्छाएं... आपस में जुडी हुई हैं, हर एक सबसे ऊपर पहुंचने की कोशिश कर रही है और भीतर एक प्रकार का सतत संघर्ष पैदा कर रही है...।'

एक शिक्षक को इस अहसास के साथ काम करना होगा कि ऐसे सभी **'छापों'** को ठीक से प्रबंधित किया जाए और इस बात पर ध्यान केंद्रित किया जाए कि बच्चा क्या करने में सक्षम है, न कि वह क्या करने में सक्षम है। यह वास्तव में सामान्य ज्ञान है कि सफल लोग अक्सर वे होते हैं जिन्होंने अपने जीवन में लोकप्रिय रास्ते पर चलने से इनकार कर दिया है। उदाहरण के लिए, कक्षा में ऐसे जीवन के उदाहरण, बच्चों के बीच वास्तविक व्यक्तित्व की अवधारणा को **'छापने'** में अद्भुत काम कर सकते हैं। इस लक्ष्य में एक शिक्षक के काम में एक महत्वपूर्ण मात्रा शामिल होगी जिसे **'अन—सीखने'** की प्रक्रिया कहा जा सकता है— एक ऐसा शिक्षण जो स्कूल के वातावरण के बाहर एक बच्चे को मिलने वाले अस्वास्थ्यकर **'छापों'** को नकार देगा। नैतिकता के नरम सिद्धांत के बजाय व्यावहारिक उदाहरण इस लक्ष्य की प्राप्ति में प्रभावी हो सकते हैं।

ग्यारहवां लक्ष्य— सभी उपकरणों का सर्वांगीण विकास

श्री अरविंद घोष ने लगातार कहा था कि सभी मनुष्य ईश्वर के उपकरण हैं। चाहे हम इसे जानें या न जानें, हम सभी पृथ्वी पर अपनी गतिविधियों के माध्यम से ईश्वर के उद्देश्य की पूर्ति कर रहे हैं। कुछ मामलों में गतिविधियाँ स्पष्ट रूप से अच्छाई और सभ्यता के विपरीत हो सकती हैं। हालाँकि, ऐसी गतिविधियों की गहन जाँच से पता चलता है कि वे ज्ञान के माध्यम से सुधार के एक बडे उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

चूँकि समग्र शिक्षा मनुष्य को ईश्वरीय उद्देश्य के लिए तैयार करने का एक कदम है, इसलिए एक शिक्षक को बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को बढ़ाना चाहिए। किसी भी तिमाही के दौरान आश्रम स्कूल की गतिविधियों के अवलोकन से पता चलता है कि एक बच्चे को गतिविधियों की विशाल श्रृंखला और विविधता से अवगत कराया जाता है। विशेष रूप से उनकी बौद्धिक आवश्यकताओं के अनुरूप होने के बजाय, वहां की गतिविधियाँ बच्चे के शरीर को तेज करती हैं, गायन, नृत्य, अभिनय और कई अन्य गुणों जैसी उदार कलाओं में उसकी रुचि विकसित करती हैं। संपूर्णता की यह भावना, जो आश्रम स्कूल के साथ–साथ समग्र शिक्षा प्रणाली का पालन करने वाले कुछ अन्य स्कूलों में एक बच्चे को प्रदान की जाती है, एक बच्चे की शारीरिक, महत्वपूर्ण और अन्य क्षमताओं को मजबूत करने में बहुत मदद करती है। माँ इसे शानदार ढंग से समझाती हैं। 'जब आप पत्थर से निर्माण करना चाहते हैं, तो आप उसे छेनी से बनाते हैं; जब आप एक निराकार ब्लॉक को एक सुंदर हीरा बनाना चाहते हैं, तो आप उसे छेनी से काटते हैं। खैर ये तो वही बात है. जब आप अपने मस्तिष्क और शरीर से ईश्वर के लिए एक सुंदर उपकरण बनाना चाहते हैं, तो आपको इसे विकसित करना होगा, इसे तेज करना होगा, इसे परिष्कृत करना होगा, जो कमी है उसे पूरा करना होगा, जो है उसे पूर्ण करना होगा।' 'स्कूल का माहौल यहां कार्यशाला है और शिक्षक मूर्तिकार है। चूँकि व्यक्ति एक एकीकृत इकाई है, किसी भी संकाय की उपेक्षा दूसरों में हुई प्रगति को बाधित कर सकती है, और यही कारण है कि अभिन्न शिक्षा के सिद्धांत समय की मांग हैं।'

निष्कर्ष

समग्र शिक्षा प्रणाली के ग्यारह लक्ष्य स्पष्ट रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए निर्धारित किए गए हैं कि शिक्षा प्रक्रिया में सभी हितधारक और प्रतिभागी कक्षा में अपनाई जाने वाली कार्रवाई के तरीके को ठोस रूप में देख सकें। लक्ष्यों की जांच से पता चलता है कि समग्र शिक्षा प्रणाली की सफलता का दायित्व आम तौर पर और महत्वपूर्ण रूप से शिक्षक पर पडता है। चूंकि वे समग्र शिक्षा के सिद्धांतों और उद्देश्यों के प्रत्यक्ष जानकार हैं, इसलिए उनसे वह बनने की उम्मीद की जाती है जिसे श्री अरविंद घोष एक अलग संदर्भ में **'ईश्वर के इच्छुक सेवक'** कहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- भारती, शुद्धानंद (1948) 'श्री अरविंद–द डिवाइन मास्टर' पुदुयोग निलयम, पांडिचेरी, भारत।
- चट्टोपाध्याय, डी.पी. (1976) 'हिस्ट्री सोसाइटी, एंड पॉलिटी: इंटीग्रल सोशियोलॉजी ऑफ श्री अरविंद मैकमिलन, नई दिल्ली।
- गांधी, किशोर (1965) 'श्री अरविंद का सामाजिक दर्शन', श्री अरविंद सोसायटी, पांडिचेरी, भारत।
- अयंगर, के.आर. (1974) 'श्री अरविंद : एक शताब्दी श्रद्धांजलि', श्री अरविंद आश्रम प्रेस।
- मुखर्जी, जुगल किशोर (2002) 'फ्रॉम मैन ह्यूमन टू मैन डिवाइन: श्री अरविंद का मनुष्य की विकासवादी नियति का दृष्टिकोण', श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।
- पुराणी, ए.बी. (1964) 'द लाइफ ऑफ श्री अरविंद', श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।

Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

- सेठना, के.डी. (2003) 'द विजन एंड वर्क ऑफ श्री अरविंद', श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।
- श्री अरविंद (2001) 'द लाइफ डिवाइन', श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।
- माँ, शिक्षा (भाग I, II, III) (1997) श्री अरविंद आश्रम, पांडिचेरी।
- श्री अरविंद आज की प्रासंगिकता, श्री अरविंद समिति, 1975